भावना विकसित हो गई हो तो फिर राष्ट्रीय एकता असम्भव है।

TOPIC- राष्ट्रीय एकता समिति (National Integration Committee)

29.06.21
SC-102/SEM-1

ऊपर हमने ऐसी अनेक बाधाओं की चर्चा की है जो राष्ट्रीय एकता के मार्ग में है। इन बाधाओं को दूर करके राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए भारतीय सरकार ने दो समितियों का गठन किया—एक भावात्मक एकता समिति तथा दूसरी राष्ट्रीय एकता समिति। भावात्मक एकता समिति के अध्यक्ष डॉ० सम्पूर्णानन्द थे। ऐसे ही राष्ट्रीय एकता समिति की अध्यक्षता श्रीमती गाँधी ने की थी। भावात्मक एकता समिति का गठन सन् 1961 ई० में हुआ तथा राष्ट्रीय एकता समिति की स्थापना सन् 1967 ई० में हुई। भावात्मक एकता समिति के विषय में हम अगले अध्याय में प्रकाश डाल रहे हैं। यहाँ हम राष्ट्रीय एकता समिति के विषय में चर्चा कर रहे हैं। इस समिति की बैठक जून सन् 1968 ई० में श्रीनगर में हुई जहाँ पर राष्ट्रीय एकता विकास हेतु मुख्य-मुख्य उद्देश्यों की घोषणा की गई। इस समिति ने राष्ट्रीय विकास की समस्या को सलुझाने के लिये तीन उपसमितियों का संगठन किया। पहली उपसमिति साम्प्रदायिक एकता की समस्या पर विचार करने के लिये बनाई गई। दूसरी उपसमिति ने क्षेत्रीय समस्याओं पर विचार किया तथा तीसरी उपसमिति की रचना शिक्षा को एकता मूलक बनाने के लिए की गई। उक्त तीनों उपसमितियों ने अपने-अपने विषयों के सम्बन्ध में राष्ट्रीय एकता समिति के सामने संयुक्त सुझाव रखे जिन्हें समिति ने स्वीकार कर लिया। समिति ने राष्ट्रीय एकता के लिये जहाँ एक ओर विभिन्न सुझाव दिये वहाँ दूसरी ओर यह भी खुले शब्दों में स्पष्ट कर दिया कि राष्ट्रीय एकता को स्थापित करने का उत्तरदायित्व केवल सरकार पर ही नहीं है अपितु देश के प्रत्येक नागरिक पर है। अतः समिति ने राष्ट्र से अपील की कि इस महान् कार्य को सफल बनाने के लिये राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण सहयोग प्रदान करे।

राष्ट्रीय एकता समिति के सुझाव (Suggestions of National Integration Committee)—राष्ट्रीय एकता समिति ने जहाँ एक ओर राष्ट्रीय एकता के लिये शैक्षिक कार्यक्रमों का सुझाव किया वहाँ दूसरी ओर शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों तथा कार्यक्रमों के विषय में भी सुझाव दिये—

राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education for National Integration)—राष्ट्रीय एकता समिति ने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों पर बल दिया—

(i) सभी बालकों को देश के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान कराया जाये।

(ii) बालकों को स्वतन्त्रता प्राप्ति के सम्बन्ध में प्रमुख घटनाओं का ज्ञान कराया जाये।

(iii) देश की विभिन्न जातियों तथा सम्प्रदायों में राष्ट्रीय एकता को विकसित करने वाली पढ़ाई-लिखाई पर विशेष बल दिया जाये।

(2) **राष्ट्रीय एकता के लिये शैक्षिक कार्यक्रमों का सुझाव** (Suggestions for Educational Programmes for National Integration)—समिति ने राष्ट्रीय एकता के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये—

(i) स्कूल में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों की जाँच की जाये।

(ii) इन पुस्तकों से अराष्ट्रीय भावना को विकसित करने वाली बातें निकाल दी जायें।

(iii) सभी जातियों तथा धर्मों के लोग राष्ट्रीय तथा लोकप्रिय मेलों एवं त्यौहारों में भाग लें।

(iv) साम्प्रदायिक एकता को विकसित करने के लिये नाटकों तथा वाद-विवादों का आयोजन किया जाये।

(v) राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित करने के लिये फ़िल्मों तथा समाचार पत्रों एवं रेडियो का प्रयोग किया जाये।

(vi) विघटनकारी प्रवृत्तियों को दूर करने के लिए विशिष्ट फ़िल्में तैयार की जायें।

(vii) सरकारी पदों पर नियुक्तियाँ धार्मिक; प्रान्तीय तथा जातीय एवं साम्प्रदायिक आधारों पर न की जायें।

(viii) उच्च पदों पर नियुक्ति करते समय अखिल भारतीय दृष्टिकोणों को अपनाया जाये।

राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा का कार्यक्रम
(Programme of Education for Developing National Integration)

उपर्युक्त बातों को दृष्टि में रखते हुए हमें स्कूलों में इस प्रकार का शैक्षिक कार्यक्रम तैयार करना चाहिये जिससे प्रत्येक बालक राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत हो जाये। निम्नलिखित पंक्तियों में हम विभिन्न स्तरों के शैक्षिक कार्यक्रम पर प्रकाश डाल रहे हैं—

(1) **प्राथमिक स्तर** (Primary Stage)—प्राथमिक स्तर पर निम्नलिखित कार्यक्रम होना चाहिये—

(i) बालकों को राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय चिन्ह तथा राष्ट्रीय पक्षी एवं राष्ट्रीय पुष्प आदि का ज्ञान कराया जाये।

(ii) स्वतन्त्रता-दिवस तथा गणतन्त्र-दिवस आदि राष्ट्रीय पर्व मनाये जायें।

(iii) बाल-दिवस, शिक्षक-दिवस तथा महापुरुषों के जन्म दिवस मनाये जायें।

(iv) महान् व्यक्तियों के जीवन से परिचित कराया जाये।

(v) लोकगीतों तथा कहानियों पर विशेष बल दिया जाये।

(vi) भारत के विभिन्न क्षेत्रों की कहानियाँ सुनाई जायें।

(vii) सामाजिक जीवन का सरल परिचय दिया जाये।

(viii) बालकों को प्रत्येक क्षेत्र के मानव-भूगोल का हल्का-हल्का ज्ञान कराया जाये।